कार्यालय, जिला कलक्टर डूंगरपुर (राज.)

सत्यमेव जयते

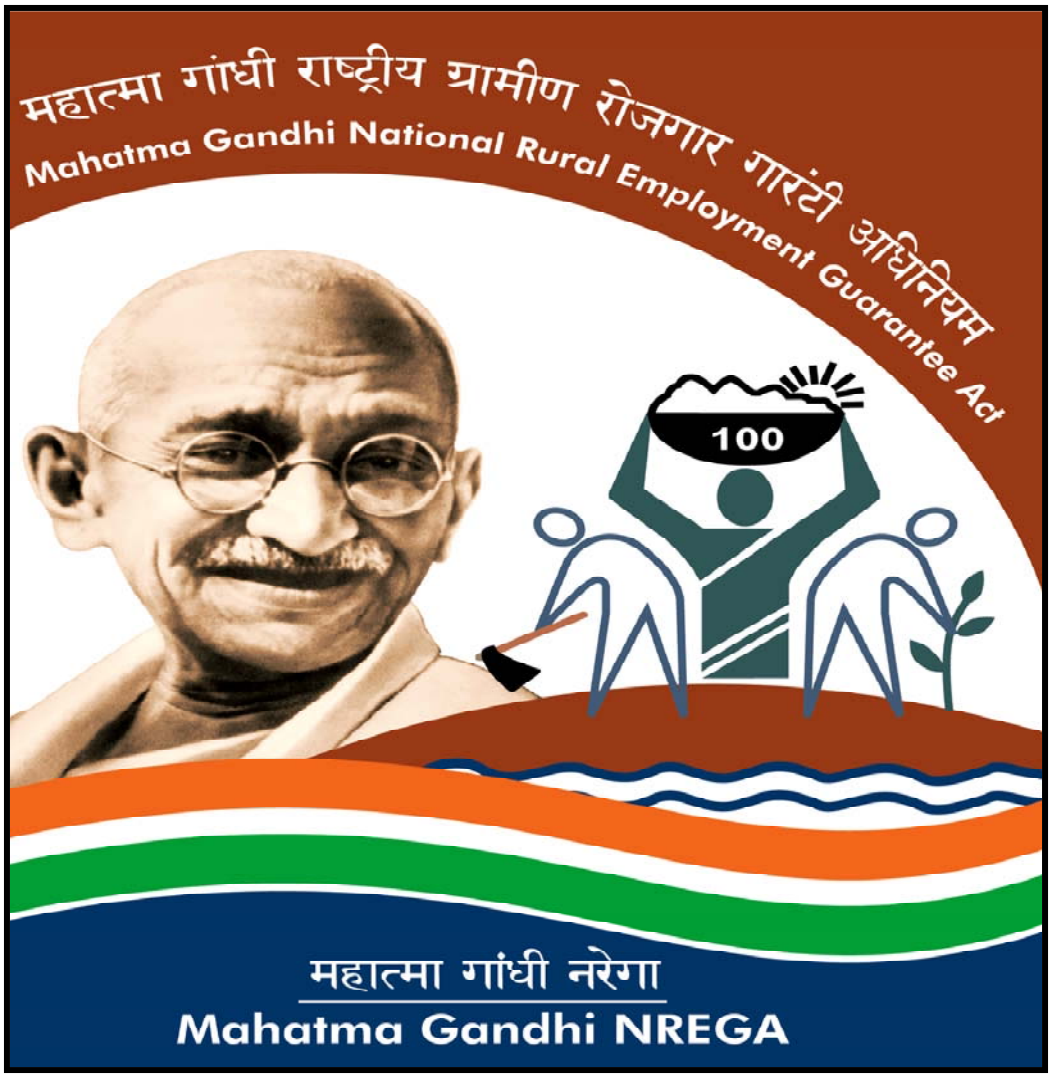

सफलता की कहानियां

जिला डूंगरपुर (राज)

सफलता की कहानियां

राहत की सांस और आंखों की चमक ने दी सफलता की गवाही

जनजाति बहुल दक्षिणांचल डूंगरपुर जिले में विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण खेती के लिए पर्याप्त अनुकूलताएं नहीं है वहीं औद्योगिक दृष्टि से भी पर्याप्त विकसित नहीं होने के कारण श्रमिकों के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं है। आजीविका संकट से त्रस्त आदिवासियों व अन्य जनसामान्य के समक्ष ऐसी स्थितियों में रोजगार की तलाश में समीपस्थ राज्यों गुजरात, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के शहरों की ओर पलायन करना ही जीवन का एकमात्र आधार था। परिवार का मुखिया परदेस में हाड़तोड़ मेहनत करता और घर पर बच्चों की लंबी फौज वाले परिवार का पेट पालता। इधर मुखिया विहीन घर में बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं होती और प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही बच्चों का स्कूल छूट जाता। मजबूर परिवारजन भी पर्याप्त पैसा न होने के कारण इधर–उधर से उधार लेकर किसी तरह परिवार का गुजारा करते और परिवार कर्जे के बोझ से दिनों–दिन दबता जाता। उधर वर्ष भर शहरों की खाक छानते यहां के लोग तीज–त्यौहार पर ही अपने परिवार और सगे सम्बन्धियों का चेहरा देख पाते थे।

जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, राजस्थान के प्रारंभ होने के साथ ही आजीविका तलाश में शहरों की ओर गए लोग धीरे–धीरे अपने वतन को लौटने लगे। अब उन्हें अहसास हो गया था कि वर्ष में सौ दिनों तक सरकार द्वारा उन्हें गारंटेड रोजगार उपलब्ध होगा।

हर परिवार का बना जॉब कॉर्ड .....श्रमिकों ने किया कार्य के लिए आवेदन,... कार्यों की स्वीकृत जारी हुई और कार्य प्रारंभ होने के साथ ही मिला हर मांगने वाले हाथ को रोजगार। रोजगार के बाद मिली मजदूरी से संवरे कई परिवार। कहीं किसी परिवार में शहनाई बजी तो कहीं नौनिहाल को मिला शिक्षा प्राप्त करने का अवसर। किसी परिवार को मिली कर्जे से मुक्ति तो किसी परिवार की वनिता को मिली शक्ति। आहत को राहत और निर्बल को संबल प्रदान करती राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, राजस्थान ने इस जिले के हजारों परिवारों को राहत की सौगात प्रदान की है वहीं जिले को विकास के नए सोपानों तक पहुंचाया है।

निर्बलों को मिली राहत की सांस और आंखों के कोनों से संतुष्टि की चमक की बानगी है यह कहानियां।

सफलता की कहानी – 1

भिक्षावृत्ति छोड़ उद्यमवृत्ति अपनाई उन्होंने

'' हम घर–घर घूमते थे इसी आस में कि कहीं से रोटी का टुकड़ा या दो पैसे मिल जाए। दिन–दिन भर घूमकर सौ–पचास घरों की खाक छानने पर बमुश्किल परिवार के लिए एक समय की रोटी का इंतजाम हो जाता था। इस पर भी गृहस्वामी द्वारा बुरी तरह से दुत्कारना हमारे लिए मरने के समान लगता। दिन में इस तरह कई–कई बार मरते थे हम लोग। अब हमने भीख मांगना छोड़ दिया है और संकल्प करते है कि अगर हमें काम मिलता रहे तो हम कभी भी भीख नहीं मांगेगे और मेहनत करके जीवनयापन करेंगे। ''

यह कहना है डूंगरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर दूर धंबोला के निकट कुवाड़ियाफला बस्ती में रहने वाले वादी जाति के लोगों के जो जिले में संचालित ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत चल रहे कार्यो पर लगे है और जिन्होंने भिक्षावृत्ति को छोड़ उद्यमवृत्ति को अपनाया है।

भिक्षावृत्ति की विवशता से निजात पाने और श्रम मार्ग अपनाने की इनकी मानसिकता को अवसर प्रदान करने वाली ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना इन परिवारों के लिए वरदान साबित हुई है। वर्षो से भीख मांगकर परिवाजनों का भरण पोषण करने वाले इस बस्ती में कुल 40 परिवार है । लगभग सभी परिवार इस योजना से जुड़े है और इन दिनों श्रम से जीविकोपार्जन कर स्वाभिमानी जीवन जी रहे हैं। काम पर आने वाले इन लोगों में 65 वर्षीय बुढ़िया है तो 25 वर्षीय युवक युवतियां भी।

हर किसी को काम मिलने की खुशी है तो भिक्षावृत्ति जैसे अधम माने कार्य से निजात पाने का उत्साह। खुशी–खुशी दिनभर काम करने के बाद अपने टूटे फूटे छप्पर से मुक्त जीवन बीता रहे इन लोगों को सरकार से एक ही आशा है कि काम मिलता रहे तो उनके परिवार की गाड़ी लाईन पर आ लगे। उनका मानना है कि घर में पैसे रहेंगे तो बच्चों की पढ़ाई और उनके विकास की ओर भी कुछ सोचा जा सकेगा वरना तो सिर्फ भीख के सहारे कुछ भी संभव नहीं है।

40 वर्षीय जोरिया कचरू वादी इस पूरी बस्ती के संरक्षक हैं और वे खुद मेट का कार्य करते हैं। वे बताते है कि रोजगार गारंटी योजना हम लोगों को स्वाभिमानी और मेहनत वाला जीवन जीने की प्रेरणा देने के लिए आई है। हम लोगों को काम मिल रहा है और जीवनयापन हो रहा है वरना तो हमारे पास करने के लिए कोई काम नहीं था। गारंटी योजना ने तो उनके घर–परिवार की हालत ही बदल दी है। हर कोई चाहता है कि वह काम पर जाए और कुछ कमाए। अब इस बस्ती में इक्के दुक्के लोग ही भीख मांगने जाते हैं। जोरिया के साथ ही कई परिवार योजना के प्रारंभ होने के बाद लगातार नरेगा कार्यो पर आ रहे है और अपने परिवार का भरणपोषण कर रहे हैं।

जिले के धंबोला कस्बे के निकट कुवाड़ियाफला बस्ती के वादी जाति के लोग जो भिक्षावृत्ति से उद्यमवृत्ति के मार्ग की ओर उन्मुख हुए हैं।

सफलता की कहानी – 2

पार्वती / जयन्तिलाल कलाल, 47 वर्ष
ग्राम पंचायत धंबोला,
पंचायत समिति सीमलवाड़ा
जोब कार्ड नं. 51

पार्वती ने अपने बूते चलाया घर

''पति रिक्शा चलाते थे, फिर कुछ कर्ज लेकर कमाने के लिए कुवैत गए परंतु वहां बीमार हो गए। ऐसे में घर की आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गई। अब मैं रोजगार गारंटी योजना के कामों पर जाती हूँ और घर का खर्चा चला रही हूँ।

यह कहना है जिले के सीमलवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत धंबोला की पार्वती कलाल का जो पति के बीमार होने की स्थिति में अर्द्धांगिनी की अपनी भूमिका निभाते हुए रोजगार गारंटी योजना के सहारे अपने गृहस्थजीवन की गाड़ी को चला रही है।

वह कहती है कि पति कुवैत में है और बीमार होने के कारण वे घर पर पैसा भेजने में असमर्थ है। ऐसे में दो लड़कों की पढ़ाई व घर का खर्चा वहन करना कठिन कार्य था। अब ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना ने उसे संबल प्रदान किया और घर की स्थिति संभली।

उसने बताया कि उसने रोजगार गारंटी योजना के कामों पर जाकर बेटी की डिलेवरी का खर्च वहन किया और बारहवीं तथा चौथी में पढ़ने वाले दोनों बेटों की पढ़ाई का खर्चे के साथ ही घर को संभाला है।

वह बताती है कि योजना के तहत उसे कार्यक्षेत्र पर उपस्थित होने वाले श्रमिकों को पानी पिलाने का कार्य सौंपा गया है जिसे वह पूरी ईमानदारी से करती है और प्राप्त मजदूरी से अपने घर को चला रही है। वह खुश है इसलिए कि उसे श्रम कर रहे सैकड़ों श्रमिकों की सेवा का अनूठा कार्य दिया गया है।

ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के एक कार्यक्षेत्र पर बैठी पार्वती कलाल।

सफलता की कहानी –3

कारीलाल, 21 वर्ष, **सुरता**, 20 वर्ष
ग्राम पंचायत कांकरादरा,
पंचायत समिति, बिछीवाड़ा।
जोब कार्ड नम्बर 25

विकलांग दम्पत्ति की पालनहार बनी गारंटी योजना

फौलादी ईरादे हो तो विकलांगता भी दम तोड़ती नज़र आती है। ऐसे में सरकार का सहारा मिल जाए तो विकलांगता बिल्कुल ही पस्त हो जाती है। अपनी विकलांगता के बावजूद एक दम्पत्ति ने परिवार से अलग हो पूरी तरह आत्मनिर्भर जीवन बिताने का फैसला किया महज इसलिए कि उनके जीवन में फौलादी ईरादों के साथ राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, राजस्थान का संबल भी जुड़ गया था।

विकलांग दम्पत्ति द्वारा रोजगार गारंटी योजना को अपने पारिवारिक जीवन का आधारस्तंभ बनाकर जीवनयापन करने की कहानी है जिले के बिछीवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत काकरादरा की।

गांव की एक पहाड़ी पर बने घर में अपने माता पिता और भाईयों से अलग होकर आत्मनिर्भर जीवन बिताते विकलांग कारीलाल और सुरता ने वर्ष 2005 में ही शादी की। आत्मविश्वास भरा 21 वर्षीय कारीलाल दसवी तक पढ़ा हुआ है तो उत्साही 20 वर्षीय सुरता आठवीं तक। भगवान ने एक ओर विकलांगता का अभिशाप देकर उन्हें दोनों पैरों से खड़ा होने में अक्षम बनाया तो दूसरी ओर स्वाभिमान व फौलादी ईरादों की ताकत देकर सक्षम समाज के समक्ष मिसाल बनाकर दोनों पैरो पर खड़ा कर दिया।

कारीलाल बताता है '' बचपन से ही विकलांगता का अभिशाप सहते–सहते परेशान सा हो गया था। स्कूल, गांव, समाज और परिवार.... हर जगह मैं बिल्कुल अक्षम था। मन में था कि पूरी ऊर्जा के साथ काम करूं पर किसी प्रकार का मौका नहीं था। दूसरों के भरोसे जिन्दगी निकालने की कल्पना से सिहर उठता था परंतु मन मसोस कर इसलिए भी रह जाता था कि आखिर काम करू तो भी कौनसा....?

निराशा और चारों तरफ से हताश होकर मैने दसवी तक पढ़ाई करने बाद स्कूल भी छोड़ दिया। इसके बाद शादी हो गई। थोड़ी हिम्मत पत्नी के कारण आई और इसी दौरान ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना मेरे जीवन में एक आशा की किरण लेकर आई। जोब कार्ड बना तो मैने और पत्नी ने काम के लिए आवेदन किया। ग्राम प्रशासन ने हमारी स्थितियों को देखते हुए हमें काम दिया मेट का। बैसाखियों के सहारे ही सही हम पति पत्नी दोनों ही साथ–साथ काम पर आते है, दिन भर गांव के सैकड़ों भाई–बहनों और बुजुर्गों के साथ काम करते है। खुशी मिलती है और संतोष भी कि आज हम किसी पर आश्रित नहीं है। रूखी–सूखी जो भी खा रहे है पूरी मेहनत की।

वह कहता है कि आज उनके जीवन में जो कुछ भी है सब कुछ रोजगार गारंटी योजना की बदौलत है वरना तो वह आज भी घर के किसी एक कौने में घसीटता दिन बिता रहा होता। उधर उसकी पत्नी सुरता भी कहती है कि मैने तो इस विकलांगता के कारण कभी सोचा भी नहीं था कि कभी किसी तरह का काम कर पाउंगी। सरकार ने निश्चित ही हम दोनों पर तो इस योजना के माध्यम से उपकार किया है।

गांव कांकरादरा में सड़क निर्माण कार्य में श्रमिकों के मस्टरोलों की जांच करता विकलांग कारीलाल व उसकी पत्नी सुरता।

सफलता की कहानी –4

दितली/हरजी, 38 वर्ष,
गांव घाटा, ग्राम पंचायत कांकरादरा,
पंचायत समिति, बिछीवाड़ा।
जोब कार्ड नम्बर 856

दितली को मिली खदान की हाड़तोड़ मजूरी से मुक्ति

तपती धूप हो चाहे, कंपकपाती सर्दी हर मौसम में वह पत्थरों की खदानों में दिनभर हाड़तोड़ मजदूरी करती थी। दिन–दिन भर काम करने के बाद बमुश्किल 30 रूपयों की मजदूरी पाकर उसे दिनभर के परिश्रम के बाद भी संतुष्टि नहीं मिलती थी। घर आती तो शरीर से पूरी तरह टूटी और थकी हुई। उपर से घर का काम उसकी इस हालत में कोढ़ में खाज साबित होता। परंतु जब से रोजगार गारंटी योजना प्रारंभ हुई दितली ने खदानों पर जाना छोड़ दिया है। अब वह खुशी–खुशी रोजगार गारंटी योजना के कामों पर जाती है, अब उसे सात घण्टे काम का पूरा–पूरा दाम मिलता है, उपर से खदानों की हाड़तोड़ मजदूरी से भी मुक्ति भी मिल गई।

जिले की बिछीवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत कांकरादरा के घाटा गांव की 38 वर्षीय दितली पत्नी हरजी के जीवन में ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना राहत का संदेश लेकर आई प्रतीत हो रही है। वह स्थानीय बोली वागड़ी में कहती है '' पेले बलवाड़ा नी खानं में काम उपर जातं, पूरो दाड़ो काटी मजूरी करतं, पाणो पड़वा नी बिक। एने उपर मलता तरी रूपया। जेम तेम घर चलावता। गारंटी योजना थकी ठीक है। हो दाड़ा काम मले ने मजूरी भी पूरी। '' अर्थात पहले हम बलवाड़ा की खदानों में काम करने जाते थे। दिन भर हाड़तोड़ मजदूरी और उपर से किसी हादसे का डर। बदले में मिलती तो मात्र 30 रूपये दिहाड़ी मजदूरी। घर का गुजारा भी किसी तरह ही चलता था। रोजगार गारंटी योजना आने के बाद हमें साल में सौ दिन का रोजगार हर हाल में मिल जाता है और काम के बदले पूरी मजदूरी।

शाम को ग्राम पंचायत से पखवाड़े का भुगतान प्राप्त करके वापस आती दितली के चेहरे की ताजगी देखकर ऐसा नहीं लगता कि उसने पूरा दिन काम किया है। उसके अंग प्रत्यंग से कहीं भी थकान का नामों निशान दिखाई नहीं देता। दिखाई देता भी क्यों.....?उसे अपने मांगे काम का पूरा–पूरा दाम जो मिल जाता है। बड़ी फुर्ती से हाथ में पकड़े जोब कार्ड को दिखाती है और कहती है '' देखों आनमें, हो दाड़ा पूरा थई ग्या है। अमने अज़ी काम जुवे। अर्थात देखों इस जोब कार्ड में, सौ दिन पूरे हो गए है। हमें और काम चाहिए। अजीब सी फुर्ती की उसकी इस मुद्रा में यह जोब कार्ड दितली के लिए कागजों की एक पुस्तिका नहीं अपितु गरीबी और भूखमरी से निबटने का कोई हथियार प्रतीत हो रहा था।

सफलता की कहानी –5

अनिल कुमार भट्ट
ग्राम पंचायत खड़गदा,
पंचायत समिति, सागवाड़ा।
जोब कार्ड नम्बर 934

किराणे की दुकान की नौकरी से कहीं भली लगती है रोजगार गारंटी योजना

''किराणे की दुकान पर पूरा दिन भर काम करना और माह भर होने पर मिलने वाली तनख्वाह से परिवारजनों का पोषण करना भी संभव नहीं । दूसरी ओर रोजगार गारंटी योजना, जब मर्जी हो काम मांगों, काम करों तो मिले पूरा दाम और वह भी पन्द्रह के पन्द्रह दिनों में । किराणे की दुकान की नौकरी से कहीं भली लगती है रोजगार गारंटी योजना।'' यह कहना है जिले के सागवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत खड़गदा के अनिल कुमार भट्ट का।

वह कहता है कि योजना ने उसके परिवारजनों के लिए राहत की सौगात दी है। पत्नी गांव में खाना बनाने का कार्य करती है और वह अपनी बच्चियों के साथ रोजगार गारंटी के कामों पर जाता है। नवी तक पढ़े लिखे होने के कारण मेट का कार्य भी मिल जाता है।

अपने गुजरे दिनों के बारे में वह बताता है कि ''पिछले 20 वर्षों से मुम्बई में था, इधर उधर काम करता, कुछ खास कमाई भी नहीं थी। फिर विचार किया गांव चले और वहीं किसी दुकान पर काम करके परिवार का जीवनयापन किया जाए। वर्ष 2001 में यहां आकर किराणे की दुकान पर नौकरी करने लगा। दिन भर दुकान पर काम करने के बाद महिना होने पर हजार या 1200 रूपया मिलने लगा। उधर पत्नी गांव में खाना बनाने के काम कर कुछ राशि लाती तक कहीं जाकर परिवारजनों का भरण पोषण होता था। ऐसे स्थितियों में बड़े भाई ने मकान बनाकर दिया परंतु घर की माली हालत ऐसी है कि बने बनाए घर में किवाड़ तक नहीं लगवा पाया। अब ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना आई तो ईच्छा के अनुरूप काम मिला। काम मिलने के साथ ही महिने में दो बार घर में कमाई आने लगी है। उधर पत्नी भी काम करती है सो दो बेटियों व एक बेटे के भविष्य के लिए अच्छे सपने देखना संभव हो गया है।

सफलता की कहानी –6

भरत धर्मोत
ग्राम पंचायत खड़गदा,
पंचायत समिति, सागवाड़ा।
जोब कार्ड नम्बर 703

....अब पूरी रफ्तार से दौड़ने लगी है जिन्दगी

''वर्ष 1986 से मैं मुम्बई के होटलों में वेटर के रूप में काम कर रहा था। गत वर्ष भर से गांव आया हूँ और यहां पर ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना में काम कर रहा हूँ तो लगता है कि काम करने के बाद पूरा दाम भी मिलता है। ''

यह उद्गार है जिले की सागवाड़ा पंचायत समिति के खड़गदा गांव के 33 वर्षीय भरत पिता वेसात धर्मोत का।

भागदौड़ भरी मुम्बई की जिन्दगी से त्रास्त होकर अपने गांव में ही श्रम भरे रोजगार गारंटी योजना के कार्यो से मिलने वाली मजदूरी से खुश भरत को अब लगने लगा है कि मेहनत का फल मीठा होता है और पूरे काम का पूरा दाम भी मिलता है।

वह कहता है कि मुम्बई में तो होटलों में दिन रात काम करते करते थक जाता था। दो तीन माह में जब घर आता तो कुछेक रूपयों के सहारे उधारी ही चुकाई जा सकती थी। अब मुम्बई छोड़ दिया है और ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के कार्यो पर पूरा दिन मेहनत करने के बाद पूरा–पूरा दाम मिलता है। वह बताता है कि उसकी पत्नी नीमा भी उसके साथ काम पर आती है दोनों मिलकर काम करते है और पूरा दाम मिलता है।

भरत का मानना है कि रोजगार गारंटी योजना से जुड़ने के बाद सही मायनों में अहसास हो गया है कि काम करने का फल मीठा ही होता है। इस योजना के कारण ही जिन्दगी की गाड़ी पूरी रफ्तार से दौड़ती नज़र आ रही है।

सफलता की कहानी – 7

रेखा देवी दाहमा, सरपंच
ग्राम पंचायत खड़गदा,
पंचायत समिति, सागवाड़ा।

अब गांव में ठहरने लगे है ग्रामीण

'' एक समय था जब गांव में चहल–पहल तभी दिखती थी जब कोई तीज–त्यौहार आता था, गांव के अधिकांश परिवारों के सदस्य रोजगार की तलाश में मुम्बई सूरत, अहमदाबाद या इन्दौर जाते थे। अब रोजगार गारंटी योजना आई है तो ग्रामीण गांव में ठहरने लगे है जो सुकूनदायी स्थिति है। यह कहना है जिले की सागवाड़ा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत खड़गदा की सरपंच रेखा देवी दाहमा का।

रेखा देवी ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के आने से पहले की स्थितियों के बारे में बताती हुई कहती है कि ग्राम पंचायत के आस–पास के छोटे–छोटे गांव–फलों के कई व्यक्ति रोजगार की तलाश में पलायन कर जाते थे। आम दिनों में पूरा गांव का गांव सूना नज़र आता था। बहुत दु:खदायी स्थिति थी, किसी परिवार में कोई बीमार होता तो परिवारजन पास–पड़ौस के किसी अन्य व्यक्ति को ढूंढते और रोगी को चिकित्सालयों तक पहुंचाया जाता।

अब ग्रामीण रोजगार गारंटी आने के बाद गांवों की स्थितियां बदली हैं। गांव के लोग गांव में ही रूकने लगे है। यद्यपि परिवार के कुछ लोग अभी भी अन्य स्थानों पर काम की तलाश में गए हुए है परंतु अधिकांश लोग अब योजना के तहत मिलने वाले सौ दिनों के रोजगार को प्राप्त कर सुकून की जिन्दगी बिता रहे हैं।

सफलता की कहानी – 8

कमलाशंकर/वक्ता, 40 वर्ष,
ग्राम पंचायत कांकरादरा,
पंचायत समिति, बिछीवाड़ा।
जोब कार्ड नम्बर 496

राम रूठे तो रूठे, राज नहीं रूठेगा

खदानों पर काम करता था। पूरा साल भर काम नहीं मिलता था। कभी काम नहीं होता तो चार सदस्यों वाले परिवार का पेट पालना मुश्किल हो जाता। थोड़ी बहुत खेती है वह भी वर्षा पर निर्भर है। अब रोजगार गारंटी योजना आई है तो सौ दिनों तक तो काम की गारंटी हो गई है। राम रूठ सकता है परंतु अब राज तो नहीं रूठेगा।

कुछ इसी तरह है भाव है कांकरादरा के 40 वर्षीय कमलाशंकर के। कभी दिनभर पत्थरों की खदानों में कठोर पत्थरों को चीरता कमलाशंकर का कहना है कि खदानों के कठोर काम से तो बेहतर है कि रोजगार गारंटी के काम पर आवे। ज्यादा मेहनत करेंगे तो ज्यादा मजदूरी मिलती है। इसमें तो समय का बंधन भी नहीं है। जब भी समय मिलता है काम पर आओ और दिनभर का काम अपनी सुविधा अनुसार निबटाओ।

उसका मानना है कि खदानों पर तो आठ घण्टे लगातार काम करना पड़ता था। यहां ऐसा नहीं है, जब भी आपकी ईच्छा हो काम मांगों, काम हाजिर होगा। काम पर जाओं तो मेट काम मापकर देता है और शाम को मेजरमेंट कर लेता है। जितना काम हुआ, उतना पैसा मिल जाता है। किसी प्रकार बंधन नहीं है। पखवाड़े के पखवाड़े काम का पूरा दाम मिलता है। कमलाशंकर की नज़र में इसके अलावा सबसे बड़ा फायदा तो इस बात का है कि काम अपने गांव अथवा आसपास में ही मिल जाता है। इसके लिए कहीं दूर किसी खान पर जाने की आवश्यकता भी नहीं है। काम के साथ घर और खेती की देखभाल करना भी संभव हो जाता है।

वह कहता है कि रोजगार गारंटी के काम ने तो उसकी दिनचर्या ही बदल दी है। व्यवस्थित काम और व्यवस्थित दाम। फिर अपने गांव में ही विकास के काम भी हो रहे है। करोड़ों रूपया गांव में आ रहा है। गांव के हर परिवार को काम मिल रहा है इससे ज्यादा खुशी की बात क्या होगी।

सफलता की कहानी – 9

मीरा खांट/मोगा, 54 वर्ष
कोवाड़ियाफला, ग्राम पंचायत धंबोला,
पंचायत समिति सीमलवाड़ा
जोब कार्ड नं. 128

बेटी की शादी का कर्जा भर रही हूँ ....!

'' लोगों के घरों में काम करती थी परंतु बमुश्किल एक घर से महिने भर का 100 रूपया मिलता था। अब रोजगार गारंटी योजना आई है तो हाथ में पैसा रहता है। इससे मुझे काफी राहत प्राप्त हुई है। ''

यह कहना है जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत धंबोला अन्तर्गत कोवाड़ियाफला की मीरादेवी का।

वह बताती है कि घर की हालत अच्छी नहीं थी सो लोगों के घरों में काम करने जाना पड़ता था। बेटा अहमदाबाद में काम करता है शादी लायक हो गया है परंतु अभी–अभी बेटी की शादी करवाई थी उसका कर्जा भर रही हूँ। पुराना कर्ज निबटे तो बेटे कमलेश की शादी के बारे में सोचू।

पहले लोगों के घरों में काम करती थी तो बड़ी मुश्किल से राशन पानी का खर्चा निकलता था। घर में कोई बीमार हुआ या कोई तीज त्यौहार आया तो कहीं से उधार लेना पड़ता था। अब वह स्थितियां नहीं रही। अब रोजगार गारंटी योजना आ गई है तो मेरे हाथ में पैसा रहता है। काम करती हूँ तो पैसा भी मिलता है। किसी बात की फिक नहीं रहती है। योजना से मुझे काफी फायदा हुआ है।

मीरा के घर परिवार का संबल बनी ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना जिले के ऐसे ही कई परिवारों में संबल और राहत का संदेश लेकर पहुंची है।

सफलता की कहानी – 10

शंकरलाल/पुनाजी, 48 वर्ष
नवाघरा, ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा,
पंचायत समिति, डूंगरपुर।
जोब कार्ड नम्बर 199

अहमदाबाद छोड़ा, बिना कर्ज लिये करवाया बेटी का ब्याह

''बचपन से ही मैं अहमदाबाद शहर के कालूपुर ईलाके में गन्ने के रस की दुकान पर काम करता था, पांच–छः महिने में एक बार ही घर आ पाता था। ऐसे में घर–परिवार की बड़ी चिन्ता लगी रहती थी, खेती–बाड़ी पर भी ध्यान नहीं रहता था, उपर से पैसों की तंगी। रोजगार गारंटी योजना एक वरदान बनकर आई। इसके कारण मैने अहमदाबाद को तो हमेशा के लिए छोड़ दिया वहीं बेटी उर्मिला का ब्याह बिना कर्जा लिए ठाठ से करवाया।''

यह कहना है जिले की ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा से सटे नवाघरा गांव के 48 वर्षीय शंकरलाल पुनाजी खराड़ी का। पेन्ट शर्ट पहने अपनी झोपड़ी के बाहर चारपाई पर बैठे पांचवी तक शिक्षा प्राप्त शंकरलाल को रोजगार गारंटी योजना से बड़ी राहत प्राप्त हुई है। ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना आने के बाद तो उसके चेहरे पर अब तक उभरी चिंता की लकीरें भी गायब हो गई है और घर की माली हालत सुधरी है।

उसे याद है कि पहले वह अहदाबाद जाता तो महिनों तक न तो गांव में रह रहे अपने परिवार की खैर खबर ले पाता न ही अपने पांच बीघा के खेतों में बोई जाने वाली फसल का। समाज और सगे सम्बन्धियों में कोई शादी ब्याह का मौका होता तो भी वह सम्मिलित नहीं हो पाता और अहमदाबाद में दिन रात गन्ने की दुकान पर काम करता और 1500 रूपये मिलता जिसमें वहां पर रहने और आने–जाने का खर्चा होने के बाद कुछ खास नहीं बचता था। जी तोड़ मेहनत के बाद भी परिणाम शून्य।

उसका मानना है कि इस योजना के आने के बाद अब वह खुद दिनभर काम पर जाता है और उसकी पत्नी मीर और बेटा निपला खेती को संभालते है। समय मिलने पर वह भी खेतों का रूख करता है। इस वर्ष उसने योजना के तहत 95 दिनों का रोजगार पूर्ण कर लिया है और अब तक उसे 60 से 70 रूपयों के मध्य मजदूरी मिली है। इस वर्ष उसे अपनी फसल का अच्छा दाम मिला और योजना से मिले पैसों को मिलाकर उसने बिना कर्जा लिए अपनी बेटी उर्मिला का ब्याह करवाया। अब वह अपने सगे सम्बन्धियों के यहां शादी–ब्याह और अन्य कोई मांगलिक या अशुभ प्रसंग पर खुद शरीक होता है। उसका कहना है कि समाज में मान सम्मान भी तभी है जब वह सामाजिक मौकों में उपस्थित रहे।

योजना के आने के बाद उसे अब अहमदाबाद जाने की जरूरत महसूस नहीं हो रही है। उसका मानना है कि उसे आगे भी ऐसा करने की जरूरत नहीं रहेगी। वर्ष भर अपनी पत्नी, बेटे और बैलों की एक जोड़ी के साथ वह खुद पूरी मेहनत करता है और इस परिश्रम से मिलने वाले प्रतिफल से उसका पूरा परिवार प्रसन्न है।

नवाघरा में अपने घर के बाहर चारपाई पर बैठा शंकरलाल खराड़ी

सफलता की कहानी –11

नाथूलाल/ कालिया, 40 वर्ष
नवाघरा, ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा,
पंचायत समिति, डूंगरपुर ।
जोब कार्ड नम्बर 157

बेटे विष्णु को जरूर पढ़ाऊंगा...!

अपने छोटे बेटे विष्णु के साथ
नवाघरा का नाथू

''जुलाई माह जैसे समस्याओं का पिटारा लेकर ही आता था, इस माह में बच्चों की बीमारी, खेतों के लिए खाद–बीज का जुगाड़, उपर से सामाजिक जिम्मेदारियां। घर में कमाने वाला एक और इन सब के समस्याओं के साथ घर में यदि रूपयों का अभाव हो तो कोई अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च कैसा उठा पाएगा। बस यही कारण था कि बेटे महेश को छठी तो दिलीप को तीसरी और बेटी तारा को पांचवी के पढ़ाई नहीं करवा पाया। परंतु अब तो रोजगार गारंटी योजना आ गई है, घर में हर महिने में दो बार कुछ रूपये तो आ ही जाते है। अपने बेटे विष्णु को जरूर पढ़ाउंगा और बड़ा आदमी बनाउंगा।'' यह कहना है नवाघरा गांव के नाथू का। नाथू को अपने दो बेटों और एक बेटी को अपेक्षित पढ़ाई नहीं करवा पाने का उसे गम जरूर है परंतु खुशी हैं कि रोजगार गारंटी योजना आने के बाद उसके एक बेटे की पढ़ाई तो नहीं रूकेगी।

ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा के इस छोटे से गांव का नाथू पिछले कई वर्षों से अहमदाबाद में गन्ने की दुकान पर काम करता था। महिने के अंत में मिलने वाले कुछ रूपये घर पर भेजता जिससे घर का खर्च चलता और सामाजिक व्यवहार होता। बच्चों की बीमारी, खाने पीने व खेतों के खाद–बीज की व्यवस्था पर होने वाले खर्च के बाद बच्चों की पढ़ाई के लिए कुछ नहीं बचता। उलटा किसी से कर्ज लेकर घर पर राशन पानी की व्यवस्था करनी पड़ती थी। घर से दूर होने के कारण 7 सदस्यों वाले परिवार में अपनी 75 वर्षीय वृद्धा माता श्रीमती देव व छोटे–छोटे बच्चों की चिंता के साथ ही अपने तीन बीघा खेतों के लिए भी चिंता बनी रहती थी। पैसों की तंगी के कारण पहले तो दो बेटों पश्चात बेटी को मजबूरन पढ़ाई छुड़वानी पड़ी।

ऐसे विकट समय में उसके लिए रोजगार गारंटी योजना राहत का संदेश लेकर आई और इसने एक वर्ष में ही इस परिवार व नौनिहालों के लिए संजीवनी का काम किया।

जॉब कार्ड बनने के बाद उसने अहमदाबाद छोड़ा और गांव में ही मजदूरी करने लगा। पखवाड़े के पखवाड़े उसके हाथों में रूपया आने लगा। उधर कभी वह खेतों में जाता तो कभी उसकी पत्नी और बेटा। अब उसने अपने छोटे बेटे विष्णु को पूरी शिक्षा प्रदान करने के लिए संकल्प कर लिया है। उसे विश्वास है कि घर में पैसों की बचत नहीं है परंतु इस योजना के कारण वह अपने बेटे की शिक्षा के लिए पूरा खर्च कर सकेगा वहीं बेटे की पढ़ाई के साथ–साथ उसके परिवार की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर सकता है। अब वह घर पर है तो उसकी वृद्धा माँ को भी संबल है वहीं उसका परिवार भी पूरी तरह आश्वस्त है। इधर उसके खेत भी पर्याप्त ध्यान दिए जाने के कारण अच्छी फसल पैदा कर रहे है।

वह खुद कहता है कि रोजगार गारंटी योजना केवल रोजगार की ही नहीं अपितु श्रमिकों के 'जीवन की गारंटी' की योजना है।

सफलता की कहानी – 12

लक्ष्मण/रतना, 40 वर्ष
नवाघरा, ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा,
पंचायत समिति, डूंगरपुर ।
जोब कार्ड नम्बर 77

...और चल पड़ा रूका हुआ खेतीबाड़ी का काम

जब से उसकी खेतीबाड़ी का आधार उसके बैलों की मृत्यु हुई थी उसे लगा था कि उसकी खेती का अब बंटाधार होने ही वाला है। जैसे तैसे वह इस कार्य को चला रहा था। परंतु जैसे ही रोजगार गारंटी योजना शुरू हुई उसने काम पर जाना प्रारंभ किया और इससे मिलने वाले रूपयों से बचत करनी प्रारंभ की। जैसे ही छः हजार रूपये एकत्र हुए उसने सबसे पहले बैलों की एक जोड़ी खरीदी और उसका खेती का रूका हुआ काम चलने लगा। अब वह खेती भी करता है और काम पर भी जाता है। वह और उसका परिवार बेहद खुश है कि उसे दोनों जगहों से अच्छी आमदनी हो रही है और जीवन नैया डूबती–डूबती किनारे आ लगी है।

यह कहानी है नवाघरा के 40 वर्षीय लक्ष्मण/रतना खराड़ी की। घर से निकल कर खुशी–खुशी अपना जोब कार्ड दिखाता हुआ रतना कहता है ''रोजगार गारंटी योजना ने तो मेरी तकदीर ही बदल दी है। अब तो मैं योजना के कार्यो पर भी जाउंगा और खेती भी करूंगा।''

अपने दु:खभरे दिनों के बाद आये राहत के मंजर के बारे में रतना बताता है कि जैसे ही उसके बैलों की मृत्यु हुई उसके सामने तो जैसे घोर संकट ही आ गया। जैसे तैसे वह घर का गुजारा कर रहा था, खेती के लिए भी इधर–उधर से बैल मांगना उसके लिए दुष्कर साबित हो रहा था। ऐसी स्थिति में ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का आगाज हुआ। गांव के सरपंच, वार्ड पंचों और अन्य जनों ने इससे जुड़ने का आह्वान किया। बस फिर क्या था, जॉब कार्ड बना, प्रपत्र 6 दिया और काम शुरू। धीरे–धीरे घर में पैसों की आवक होने लगी। सुबह–शाम काम पर जाता और खेती की सीजन में खेतों में काम करता। बैलों की जोड़ी के लिए पैसों की बचत करने लगा। फिर एक दिन बचत की हुई राशि से बैलों की जोड़ी खरीदी और इस प्रकार चल पड़ा खेतीबाड़ी का रूका हुआ काम। बैलों के कारण फसल भी अच्छी हुई और रोजगार गारंटी काम से घर की माली हालत में भी सुधार हुआ। परिवार के अन्य सदस्य भी अब बेहद खुश है।

सफलता की कहानी – 13

अमृत /रूपा, 31 वर्ष
लक्ष्मी/राजेन्द्र, 21 वर्ष
नवाघरा, ग्राम पंचायत खेड़ा कच्छवासा,
पंचायत समिति, डूंगरपुर ।
जोब कार्ड नम्बर 187 व 89

खेड़ा की अमृत और लक्ष्मी को मिला संबल

हमारे पति कामधंधे की तलाश में साल में आठ से दस महिने बाहर रहते है। दो तीन महिनों में एक बार घर पर पैसा भेजते है। ऐसे में उधार पर लाये गए राशन और अन्य सामान का बकाया चुकाने और अन्य खर्चों में ही सारे रूपये खर्च हो जाते हैं। किसी प्रकार की बचत नहीं । कभी किसी चीज की जरूरत हुई तो उधार लाना और उधार न मिले तो इसके बिना भी काम चलाना मजबूरी हो जाती थी। बच्चों की पढ़ाई और कभी–कभीर बीमार हुए तो दवाई के लिए भी घर में कानी कोड़ी भी नहीं बचती थी। हमारे पास भी कोई काम नहीं था कि कहीं जाकर काम करें और हाथ में थोड़े बहुत रूपये रहे। बड़ी विकट स्थितियां थी परंतु रोजगार गारंटी योजना आई और सारी समस्याएं दूर हो गई, अब हम कमाती है और मजे से खर्च करती है।

यह कहना है जिले के खेड़ा कच्छवासा ग्राम पंचायत के नवाघरा गांव की अमृत पत्नी रूपा और लक्ष्मी पत्नी राजेन्द्र का। दोनों की पहली बार किसी काम के लिए घर से बाहर निकली है और मजदूरी करते हुए कमाई की है। मेहनत से कमाए हुए अर्जित राशि से वे प्रसन्न है और कहते है कि अब परदेस कमाने गए पति को यदि रूपये भेजने में देर भी हो जाए तो उन्हें परिवार चलाने के लिए किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ता है।

अमृत बताती है कि उसके पति अहमदाबाद में कड़िया (चुनाई) कार्य के लिए गए हुए है। घर पर तीन लड़कियां और दो लड़कियों का बड़ा परिवार। इसमें एक 18 वर्षीय पुत्री संगीता के साथ वह स्वयं रोजगार गारंटी के कामों पर जाती है और परिवार का गुजारा कर रही है। वह बताती है कि इससे पहले वह कभी भी किसी प्रकार की मजदूरी के लिए नहीं गई थी। यह तो इस योजना का ही काम है कि वह अपने पास–पास पडौस की औरतों को देखकर काम पर जाने लगी वरना तो उसने सोचा भी नहीं था कि वह खुद कभी कमाएगी और परिवार चलाएगी।

दोनों महिलाओं के चेहरों की खुशी और आंखों की चमक जनजाति अंचल में महिला सशक्तिकरण की अनूठी मिसाल प्रस्तुत कर रही थी।

नवाघरा में रोजगार गारंटी योजना के कार्य उपरान्त घर पर आकर खुशी का ईजहार करती अमृत और लक्ष्मी

सफलता की कहानी – 14

एनीकट पर बरसी कुदरत की मेहर
बनते ही लबालब हो गया टांडा का एनीकट

पूरे मन और इमानदारी से यदि कोई कार्य आरंभ किया जाए तो भगवान की मेहर भी उस पर बरसती है इसमें कोई संदेह नहीं है। ऐसा ही एक उदाहरण डूंगरपुर जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत सीमलवाड़ा उपखण्ड क्षेत्र में हुए एक एनीकट निर्माण के रूप में प्राप्त हुआ है जिसमें प्रशासनिक प्रतिबद्धता के साथ किए गए गुणवत्तायुक्त इस निर्माण पर कुदरत की ऐसी मेहर हुई कि निर्माण के चंद घण्टों में ही एनीकट पानी से लबालब हो गया।

वर्षा जल संरक्षण और भूजल पुनर्भरण के उद्देश्य से ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत बनाया गया यह निर्माण है ग्राम पंचायत धंबोला के तहत टांडा में मोगा/धूला के घर के पास बना हुआ एनीकट। ग्राम पंचायत धंबोला अन्तर्गत टांडा में 10.74 लाख रूपयों की लागत से बने इस एनीकट का कार्य 26 मई 08 को ही प्रारंभ हुआ था। जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में ही इसका निर्माण पूर्ण हुआ कि मानसून के सक्रिय होने से हुई बरसात में यह एनीकट रातों–रात लबालब हो गया। कार्यकारी एजेंसी ग्राम पंचायत के माध्यम से बने इस एनीकट पर श्रम मद में 2.51 लाख रूपये तथा सामग्री मद में 8.23 लाख रूपये व्यय किए गए हैं। यद्यपि इस कार्य की पूर्णता अवधि छः माह थी परंतु सन्निकट वर्षा के आगमन को देखते हुए योजना से जुड़े अधिकारियों व कर्मचारियों ने श्रमिकों को प्रेरित किया तो यह कार्य निर्धारित अवधि से कही कम अवधि में ही पूर्ण हो गया।

डूंगरपुर–सीमलवाड़ा मुख्य सड़क पर बाई ओर अवस्थित इस एनीकट को इन दिनों पानी से लबालब देखकर इस मार्ग से गुजरने वाले राहगीर भी बेहद खुश नज़र आते हैं वहीं इस एनीकट के आस–पास रहने वाले काश्तकारों को भी इस बात की खुशी है कि उनके श्रम का इनाम कुदरत ने इस एनीकट को लबालब भरकर दिया है। काश्तकार कहते हैं कि इससे आस–पास के खेतों की सिंचाई संभव होगी वहीं भूजल स्तर में बढ़ोत्तरी होने से कुओं का जलस्तर भी बढ़ेगा। काश्तकार बताते है कि वर्षा दौरान इस नाले से बहता पानी व्यर्थ ही बहकर नदी में चला जाता था परंतु इसमें एनीकट बनने से वर्षा का पानी व्यर्थ नहीं बहेगा ।

ग्राम पंचायत धंबोला द्वारा बनाया गया टांडा गांव में पानी से लबालब एनीकट।

सफलता की कहानी – 15

रोजगार के साथ मिली राहत
अहारीफलावासियों के लिए वरदान बनी पुलिया

जिले के साबली गांव के अहारीफला के 120 आदिवासी परिवार इस बात से बेहद खुश है कि अब उन्हें ग्राम पंचायत अथवा गांव के नदी के उस पार तक अपने परिजनों के यहां पहुंचने के लिए नदी के पानी में होकर नहीं गुजरना पड़ेगा।

जिले की बिछीवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत साबली के इस फले के निवासियों को प्राप्त होने वाली इस खुशी का सूत्रधार बनी है राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अन्तर्गत सापण नदी पर बनने वाली पुलिया। योजना के तहत इन दिनों बन रही इस पुलिया के बनने से इस बस्ती में रहने वाले न केवल 120 आदिवासी परिवार अपितु नदी के दूसरी पार रहने वाले ग्रामीण भी कई प्रकार की परेशानियों से मुक्त हो जाएंगे। नदी पार स्थित स्कूल, ग्राम पंचायत और खेतों तक पहुंचने के लिए विद्यार्थियों और ग्रामीणों को नदी में बारहोमास रहने वाले घुटनों–घुटनों पानी से होकर गुजरना पड़ता था। इसी प्रकार नदी के उस पार स्थित खेतों से फसल लाने, ग्राम पंचायत तक मजदूरी का भुगतान लेने और शहर में किसी कार्य से जाने में भी नदी का जलप्रवाह बड़ी बाधा बन जाता था। सर्वाधिक बुरी स्थिति तो तब होती थी जब वर्षा ऋतु में नदी लबालब बहती हो। ग्रामीणों के अनुसार कई बार इन स्थितियों में मजबूर होकर जान जोखिम में डालकर तैरकर भी उस पार जाना पड़ता था।

हर दिन हर पल इस पीड़ा को झेलते ग्रामीणों के लिए ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत 24.17 लाख रूपयों की लागत से बनने वाली पुलिया मय ग्रेवल सड़क जब स्वीकृत हुई तो यहां के ग्रामीणों में उत्साह छा गया । इस कार्य पर श्रम मद पर 10.40 लाख तथा सामग्री मद पर 13.77 लाख रूपयों की स्वीकृति हुई । बस उसी दिन से सभी ग्रामीण खुशी–खुशी इस काम पर आने लगे। तपती धूप में कड़ी मेहनत से समीप की एक पहाड़ी को खोदकर सड़क के लिए मिट्टी डालते ग्रामीणों के दिल में जहां इस कार्य से मिलने वाली मजदूरी के प्रति आशा थी वहीं वर्षों से भोगने वाली पीड़ा से मुक्ति मिलने का सुकून भी था।

अहारीफला में रहने वाली ग्राम पंचायत की पूर्व वार्ड पंच मणीदेवी का कहना था कि नदी में पानी बहता तो गांव में जब तब होने वाली डिलेवरियों के लिए गर्भवतियों को उस पार ले जाने में काफी तकलीफें आती थी। सड़क व पुलिया के अभाव में इस फले में कोई भी वाहन नहीं आ पाता था ऐसे में परिवारजनों की मुश्किलें और भी बढ़ जाती थी। अब गांव में मोबाईल हो गए हैं तो एक फोन करते ही वाहन सड़क मार्ग से पुल पार करता हुआ फले तक आसानी से आ पाएगा। वह बताती है कि इन दिनों इस काम पर गांव से बड़ी तादाद में महिलाएं भी नियोजित है और दिन भर के काम से उनको इस बात की खुशी है कि वे गांव व अपनी सुविधा के लिए ही इतनी कड़ी मेहनत कर रही हैं।

ग्राम पंचायत साबली में सापण नदी पर बन रही पुलिया पर कार्यरत श्रमिक।

मीडिया प्रतिक्रिया

राजस्थान विशेष डूंगरपुर/ जल स्तर में वृद्धि

इंडिया टुडे
27 फरवरी 2008

बचत से मिला फल

डूंगरपुर में एनिकट के निर्माण से जल स्तर में अभूतपूर्व वृद्धि. आदिवासी किसान फिर खेती की ओर

अभी दो साल पहले ही अपनी जमीन को देखकर किस्मत को कोसने वाले नाथा भाई पटेल के चेहरे पर एक सफल किसान होने की चमक देखी जा सकती है. नाथा भाई के खेतों में खड़ी फसल उनकी सफलता की कहानी बयान कर रही है. अपनी खुशी जाहिर करते हुए वे कहते हैं, ''इस जमीन पर जहां घर का दाना-पानी उगना भी नामुमकिन था, वहीं पिछले दो साल से रबी और खरीफ की दोनों फसलें और सब्जियां उगने से हम तो निहाल हो गए.''

करीब दो साल से राजस्थान के डूंगरपुर जिले के आदिवासी किसानों की यही कहानी है. इस अवधि में यहां का भू-जल स्तर जिस तरह ऊपर उठा है, वह अकल्पनीय है. भू-जल स्तर बढ़ने का कारण इस क्षेत्र में भारी संख्या में एनिकट का बनना ही है. डूंगरपुर राज्य का एकमात्र ऐसा जिला है, जहां सबसे ज्यादा एनिकट बनाए गए हैं. जल संग्रहण के इस अनूठे प्रयास से जिले के किसानों के जीवन में भारी बदलाव आया है. नतीजतन, आदिवासी लोगों का रुझान अब मजदूरी की बजाए खेती की ओर होने लगा है. रोजगार के लिए गुजरात और अन्य जगहों को पलायन करने वाले आदिवासियों का नजरिया अब बदलने लगा है. ढलानी इलाका होने की वजह से यहां बरसाती पानी का इकट्ठा होना लगभग नामुमकिन-सा है. इस कारण दो साल पहले डूंगरपुर जहां भू-जल स्तर के मामले में राजस्थान के डार्क जोन में आता था और दस-बारह साल पहले तो यहां कुएं खोदने की इजाजत तक नहीं थी, वहीं अब एनिकटों के निर्माण से जल स्तर में हुई भारी वृद्धि के कारण यह जिला भू-जल के मामले में राज्य में अव्वल है. बारह लाख की आबादी वाले इस छोटे-से जिले में कुल दो हजार एनिकट हैं और लगभग इतनी ही तादाद में चेक डैम हैं. केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में चलाई गई रोजगार गारंटी योजना के तहत जिले में 300 एनिकटों का निर्माण होना था जिसमें से 100 का निर्माण कार्य पिछले वित्तीय वर्ष में हो चुका है और 100 एनिकटों का निर्माण इस वित्तीय वर्ष में किए जाने का लक्ष्य है. इस जिले में अप्रैल 2004 से जल संग्रहण व जल संरक्षण के कामों पर जोर दिया गया था. वैसे इन सबका श्रेय जिला कलेक्टर नीरज के. पवन को जाता है. सरल और सहज स्वभाव वाले नीरज इस काम का श्रेय अपनी पूर्ववर्ती कलेक्टर मंजू राजपाल को देते हैं. वे कहते हैं, ''अथक प्रयासों और सबके सहयोग से हमने साबित कर दिया है कि डूंगरपुर भी राज्य का अव्वल जिला बन सकता है.''

फिर खेती की ओर: सांगवाड़ा में आदिवासी दंपती प्रेमजी और बेला पारगी अपने खेत में, देवल नदी पर बना एनीकट (नीचे)

जिले की बिछीवाड़ा पंचायत समिति के पाल देवल ग्राम पंचायत की उत्तर दिशा में स्थित देवेल नदी तीन गांवों से बहती हुई जाती है. अधिशासी अभियंता अशोक जैन के मुताबिक पानी के बह जाने से बरसात के दिनों में भी आसपास के खेतों में खरीफ की फसल सूख जाती थी. रोजगार गारंटी योजना के तहत 2 अप्रैल 2007 को शुरू होकर मात्र दो महीने में नदी पर एनिकट का निर्माण किया गया. इसमें साल भर पानी भरा रहता है जिससे आसपास के 100 परिवारों के तकरीबन 1,500 पशुओं को पीने का पानी व लोगों के नहाने, धोने व खेतीबाड़ी के लिए पानी उपलब्ध हुआ है. इस नदी पर इस तरह के 6 एनिकटों का निर्माण किया गया है जिससे इस गांव के आसपास 14 कुओं के जल स्तर में 1 से 3 मीटर तक बढ़ोतरी हुई है. भू-जल स्तर में बढ़ोतरी के कारण अब इस जिले को डार्क जोन की बजाए ग्रे जोन घोषित कर दिया गया है.

इसी तरह बिछीवाड़ा पंचायत समिति के जालुकुंआ गांव के पोपलावाला तालाब को इसी योजना में गहरा करने का काम किया गया. इसकी भराव क्षमता 1.75 हेक्टेयर मीटर है और इसके पानी से तकरीबन 30 हेक्टेयर जमीन में लाभ हो रहा है. पहले जहां किसानों को सिंचाई के लिए आठ-दस घंटे लगते थे, वहीं अब इस तालाब की गहराई बढ़ने के बाद वे इस काम को तीन-चार घंटे में ही बेहतर तरीके से निबटा लेते हैं. बहरहाल, आदिवासी बहुल इस पिछड़े इलाके में प्रशासन की कोशिशों और योजनाओं में जनभागीदारी से विकास तो हुआ है लेकिन इसे अभी ऐसी ही और जागरूक पहल की और जरूरत है.

—कमलेश केसोट

> **“ पानी का स्तर बढ़ने के बाद पिछले दो साल से फसल और सब्जी की पैदावार बढ़ने से हम तो निहाल हो गए. ”**
>
> **नाथा भाई पटेल,** *आदिवासी किसान*

बासिया के बंजारा टांडों के लिए वरदान साबित हुई नरेगा

भादर बांध के नाले पर बना पुलिया एक हजार की आबादी के लिए सुकून लाया

-गुणवंत कलाल

सीमलवाड़ा, 7 अप्रेल। जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत बासिया ग्राम पंचायत के बंजारा टांडा, सुजाता तलाई, लिमड़ी टांडा, पनियारी टांडा व टेकरी टांडा के एक सौ दस मकानों में रहने वाले करीब ग्यारह सौ लोगों के लिए महानरेगा योजना वरदान साबित हुई है। यह बस्ती बरसात के दिनों में भादर बांध के नाले के उफान पर होने से प्रतिवर्ष तीन-चार महिने अन्य गांवों से अलग-थलक हो जाती थी। आवागमन अवरूद्ध हो जाता था और यहा के वाशिंदे एक जगह से दूसरी जगह जाने में असुविधा महसूस करते थे। यहा के विद्यार्थी व कर्मचारी कई किलो मीटर घूम कर गांव आते जाते थे। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत भादर बांध के नाले पर पुलिया निर्माण का कार्य हुआ जिससे यहा के वाशिंदों की बरसों पुरानी समस्या का अंत हो गया।

वर्ष 2008-09 में भादर बांध के नाले पर ग्राम पंचायत बासिया व धुवेड ने दो अलग-अलग पुलिया निर्माण का कार्य कराया। गांव से टांडा मार्ग पर लोक निर्माण विभाग द्वारा नरेगा अंतर्गत पहला पुलिया बनाया गया। इसके बाद पनियारी टांडा के पास ग्राम पंचायत बासिया व बदिया बड़ली बस स्टेण्ड से सुजाता तलाई मार्ग के बीच ग्राम पंचायत धुवेड द्वारा पुलिया निर्माण कराया गया। पुलिया निर्माण होने से बंजारा परिवार के करीब ग्यारह सौ लोगों को अब बारिश के दिनों में आवागमन में असुविधा नहीं होगी। गांव के परशीया बंजारा, मीका बंजारा, राजमल बंजारा, बंसीलाल बंजारा, कन्हैयालाल बंजारा, खेमराज बंजारा, गुलाब बंजारा, करण बंजारा, भंवरलाल बंजारा, उप सरपंच गंगा देवी बंजारा ने खुशी का इजहार करते हुए कहा कि नरेगा योजना उनके परिवारों के लिए वरदान साबित हुई है। पुलिया बनने से गांव से सुजाता तलाई व बदिया बड़ली से सुजाता तलाई तक प्रधानमंत्री सड़क योजनान्तर्गत सड़क निर्माण के लिए सर्वे पूरी कर ली गई है।

जनजाति काश्तकारों के लिए वरदान बनी योजना

महानरेगा में बने कुओं ने बदली डैचा की दशा

महेश जोशी

सागवाड़ा, 22 मार्च। प्रदेश के जनजाति बहुल डूंगरपुर जिले में विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण गांवों में खेती के लिये पर्याप्त अनुकूलताएं नहीं होने से काश्तकारों के सामने आजीविका संकट उत्पन्न हो गया था, ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना इन काश्तकारों के लिए राहत का संदेश लेकर आई प्रतीत हुई है। डूंगरपुर जिले में ऐसे सैकड़ों काश्तकार हैं, जिन्होंने महानरेगा की व्यक्तिगत लाभ की योजना में सम्मिलित होकर कार्य करवाते हुए न केवल अपने खेतों की दशा सुधारी है वरन् इस योजना का लाभ अपने क्षेत्र के काश्तकारों व ग्रामवासियों को प्रदान करते हुए पूरे गांव का भला किया है।

सागवाड़ा पंचायत समिति अन्तर्गत डैचा भी इसी तरह का गांव है जहां पर महानरेगा के तहत व्यक्तिगत लाभ की योजना में करवाए गए कार्य से न केवल संबंधित किसानों अपितु गांव के अन्य किसानों को भी फायदा हुआ है और इसी के चूते इस गांव की दशा ही बदल गई है। इस गांव में सिंचाई के नाम पर परंपरागत कुएं ही थे और ये कुएं भी पर्याप्त पानी नहीं होने के कारण गर्मी के दिनों में सूख जाते थे। के तहत व्यक्तिगत लाभ की योजना के तहत निजी व्यक्तियों को कुएं खोदे जाने के प्रावधानों की जानकारी दी गई तो गांव के बीपीएल परिवार के जीवा एवं पेमजी ने योजना के तहत दो अलग-अलग कुएं खोदे जाने के लिए आवेदन किया। बस फिर क्या था, ग्राम सभा में प्रस्ताव पारित हुआ। जिला प्रशासन द्वारा प्रशासनिक स्वीकृति के बाद वित्तीय स्वीकृति जारी की गई। ग्राम पंचायत तक औपचारिक स्वीकृतियां पहुंचने के बाद कार्य प्रारंभ हुआ और प्रेमजी और जीवा के परिजनों के साथ ही गांव के कई अन्य परिवार भी इस कार्य पर लगे। कुछ ही दिनों में श्रम भाग में 2 लाख 78 हजार रूपये एवं सामग्री मद में 3 लाख 58 हजार व्यय कर 60 फीट गहरा और 21 फीट चौड़े दो पक्के कुओं का निर्माण किया जिससे गांव के ही श्रमिकों को कुल 3 हजार 175 मानव दिवस सृजित हुए। काश्तकारों की समन्वित मेहनत रंग लाई। दोनों कुओं में इन दिनों पर्याप्त पानी भरा हुआ है और कुएं में पानी की अच्छी आवक हो रही है। इधर पानी की आवक को देखते हुए ग्राम पंचायत ने जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के माध्यम से जीवा को इलेक्ट्रिक मोटर तथा पेमजी को स्वीकृत कराई जिससे आज दोनों काश्तकार न केवल अपने खेतों को सिंचित कर रहे है अपितु आस-पास के खेतों को भी सिंचाई सुविधा मुहैया करवा रहे हैं। इन दो कुओं से न केवल जीवा तथा पेमजी अपितु गांव के कई अन्य परिवार भी लाभ प्राप्त कर रहे हैं और अपने खेतों को सींचकर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

फोटो-जोशी भास्कर

नरेगा की एक भी शिकायत नहीं

- भेखरेड़ में कलेक्टर की रात्रि चौपाल
- ऐसी पंचायतों के बल पर डूंगरपुर नरेगा में अव्वल
- जानकारी उपलब्ध कराने के अभाव में एक्सप्लेन को नोटिस

आसपुर, 26 जनवरी। ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित जनसमस्याओं के समाधान व मौके पर ही निराकरण के उद्देश्य से चार रही जिला कलेक्टर पूर्ण चंद्र किशन की रात्रि चौपालों की श्रृंखला में बुधवार रात्रि आसपुर पंचायत समिति क्षेत्र के भेखरेड़ गांव में रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया।

हजारीलाल मायामिक विद्यालय परिसर में आयोजित इस चौपाल के आरंभ में कलेक्टर किशन ने ग्राम पंचायत क्षेत्र में नरेगा के तहत हुए कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार की ग्राम पंचायतों के बूते ही डूंगरपुर जिला नरेगा में अव्वल है। उन्होंने लोकहितकारी नरेगा योजना को क्षेत्र का कायाकल्प करने वाली योजना बताते हुए क्षेत्र की अन्य ग्राम पंचायतों को भी इसी प्रकार के उमदा कार्य कराने का आह्वान किया और कहा कि ग्राम पंचायत के सचिव व सरपंच इस योजना का गांवों को पूरा-पूरा लाभ दिलाने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ कार्य करें ताकि सरकार की मंशानुरूप योजना का सफल क्रियान्वयन हो सके।

चौपाल में पशु चिकित्सालय का औचित्य चार्ज देने, विकासगाथा पुस्तिका का विमोचन, विद्यालय भूमि की विकासगाथाओं के नाम कराने, खेरोदिया निवासी या जनहित के नाम कराने, ग्राम पंचायत भेखरेड़ में पूर्ण करवाने की मांग की गई। इस पर कलेक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारियों से जानकारी ली और तकनीक कर्मचारियों को निर्देश दिए। चौपाल में जनप्रतिनिधियों ने बताया कि भेखरेड़ गांव में 11 केवी विद्युत लाईन टूटने से तीन पैसों की मृत्यु होने पर किसी प्रकार का मुआवजा नहीं मिलने की शिकायत की, जिस पर उन्होंने ने तहसीलदार को आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर प्रेषित करने के निर्देश दिए। गांव की सोमली बेला गौतमलाल कालूराम ने केन्द्रीय सहकारी बैंक की शाखा शाखा में केन्द्रीय की राशि दिलवाने की गुहार पर कलेक्टर ने केन्द्रीय सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक को कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस मौके पर हेरायसा ग्रामीणों ने गांव में भूगर्भजल स्तर गिरावट, सोलर सड़क निर्माण, आंगनवाड़ी केन्द्र की मरम्मत, 100 पशु की बाड़ी में एक नया रोड़ तथा तालाब पर पोनी घाट बनाने की मांग की। इस पर कलेक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को कार्यवाही के निर्देश दिए। इसके अलावा ग्रामीणों ने मोदपुर गांव की मुख्य सड़क को पक्की कराने व पुलिया निर्माण कराने, खारा नम्बर 1119 से सिरेज से मुख्य कराने, ग्राम पंचायत क्षेत्र में फोगरोर्ड-डूंगला पानी की टंकी से निकाल दिलाने, खेड़ाखाली मायामाला व मोदपुर के मालाडी फाटा से हेरायसा कनेक्शन कराने, ग्राम पंचायत कार्यालय, कृषि विस्तार कनेक्शन कराने, से डामरीकरण कराने, कृषि विस्तार कनेक्शन कराने, मालाडी राजमणि भेखरेड़ में विद्युत कनेक्शन कराने की मांग की। क्षेत्र के लिए अलग से जीएसएस स्थापने की मांग की।

ग्रामीणों ने कृषि पर्यवेक्षक द्वारा कास्तकारों को बीज उपलब्ध नहीं कराने की शिकायत की। नहीं कोटिया गांव निवासी कालिया ने खोदिरी भूमि को अन्य व्यक्ति द्वारा जबरन कब्जा करने की जानकारी देते हुए राहत प्रदान कराने की मांग की। इस पर कलेक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक जांच करा कार्यवाही के निर्देश दिए।

इससे पूर्व ग्राम पंचायत की सरपंच व अन्य जनप्रतिनिधियों ने कलेक्टर व अन्य अधिकारियों को पुष्पहार व साफा पहनाकर स्वागत किया। चौपाल में चिकित्साधिकारियों द्वारा स्वास्थ्य जन पर भी जानकारी प्रदान की गई और आह्वान किया गया कि इस प्रकार के संक्रिय लक्षण पाए जाने पर तत्काल ही चिकित्साधिकारियों को सूचित किया जाए। चौपाल में ग्राम पंचायत की सरपंच दुरज देवी, पूर्व सरपंच व उपसरपंच कांटी अपभ्रंश शरिफ मोहन, पंचायत समिति सदस्य मोतीलाल मीना, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हेमसिंह चौहान, उपखण्ड अधिकारी रामलाल पटिदार, टीडरी पंचायत अधिकारी रोशी पाल, नरेगा कार्यक्रम अधिकारी कोमी राठौड़, नरेगा अधिशासी अभियंता के एल मिलिंदिया, सहित समस्त विभागीय अधिकारी, कार्मिक और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

हम करवाएंगा आपका काम

चौपाल में ग्रामीणों ने पटवार घर द्वारा नामांतरण व अन्य प्रकरण पर जारी नहीं होने की जानकारी दी। इस पर कलेक्टर ने ग्रामीणों से कहा कि हम आप के लिए कर रहे हैं, हम आपका काम करवा देंगे। उन्होंने कहा कि चौपाली में हर समस्या का समाधान हमारा है बस जरूरत तो इसमें उपस्थित होकर अपनी समस्याओं को प्रस्तुत करने की है।

हाथों-हाथ पेंशन के लिए करवाया आवे

चौपाल दौरान ग्रामीणों ने गांव की ना [illegible] की विधवा पेंशन नहीं मिलने की बात [illegible] पर कलेक्टर के निर्देशों पर मौके पर [illegible] सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता [illegible] महादक निदेशक आर [illegible] की पात्रता जांच की और इसके पेंशन [illegible] की पुष्टि की। इस पर कलेक्टर ने [illegible] संबंधित का पेंशन जारीकृत पत्र [illegible] अधिकारी के माध्यम से [illegible] पेंशन स्वीकृत की जा सके।

नहर से संबंधित स

चौपाल में ग्रामीणों [illegible] नम्बर 6 पर सीपेज होने [illegible] होने, सोम कमांड [illegible] बतिराज व जोगाना [illegible] जम्बर 0 से 24 व [illegible] होने की जानकारी [illegible] की। कलेक्टर ने इ[illegible] को निर्देश देते हुए कहा [illegible] की बात करी।

अधिशासी अभियंता को नोटिस

चौपाल में सोम कमांड क्षेत्र जल संसाधन विभाग खण्ड के अधिशासी अभियंता अशोक [illegible] के मौजूद रहने और सोम कमांड क्षेत्र खण्ड [illegible] से संबंधित समस्याओं के संबंध में मौके पर ग्रामीणों की जानकारी उपलब्ध नहीं कराने के कारण कारण [illegible] ने नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

उड़ीसा के दल ने नरेगा कार्यों को सराहा

दरिबारी/सीमलवाड़ा। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत हुए कार्यों का अवलोकन करने के लिए उड़ीसा के ग्रामीण विकास विभागीय अधिकारियों का दल बुधवार को कलेक्टर पहुंचा। यहां से जिले में नरेगा के तहत हुए कार्यों का अवलोकन करने के बाद दल दोपहर को पुनः कलेक्टर पहुंचा तथा योजना की सराहना की। इस दल ने कलेक्टर पोसी किशन व जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हेमसिंह चौहान से मुलाकात कर यात्रा के अनुभवों को बताया। पैंतीस सदस्यीय इस दल के सदस्यों ने कलेक्टर व सीईओ को जिले में योजना के तहत जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किए गए कार्यों को गुणवत्तायुक्त बताया और कहा कि सभी कार्य क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए उपयोगी है। सदस्यों ने जिले में योजना के तहत हुए सघन पौधरोपण कार्य की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि जिले के अनुभवों के आधार पर उड़ीसा में इस योजना के संचालन के प्रयास किए जाएंगे। कलेक्टर से जाते समय दल ने गजपति जिले के कलात्मक हस्तशिल्प उत्पाद भेंट किए। जिले की ओर से दल को नरेगा से संबंधित प्रकाशित साहित्य भेंट किया गया। इस मौके पर अधिशासी अभियंता केएल्. सिसोदिया और जिला परिषद के कई अधिकारी मौजूद थे।

देखा : अपने भ्रमण के दौरान दल के सदस्यों ने आसपुर पंचायत समिति अन्तर्गत ग्राम पंचायत मुंगेड़ और धावड़ी में कई निर्माण कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने यहां पर ग्राम पंचायत द्वारा नरेगा के तहत निर्मित एनीकटों के साथ ही निर्माणाधीन व निर्मित सड़क कार्य का अवलोकन किया। उन्होंने यहां पर श्रमिकों से भी संवाद किया और कार्य के बदले प्राप्त होने वाली मजदूरी तथा किए जाने वाले कार्य के बारे में जानकारी ली।

रवानगी आज : नरेगा कार्यों के भ्रमण के लिए दल गुरुवार को सुबह उदयपुर के लिए रवाना होगा। वहां नरेगा कार्यों को देख जयपुर होता हुआ दिल्ली के लिए रवाना होगा।

डूंगरपुर. नरेगा कार्यों के अवलोकन के लिए पहुंचे उड़ीसा के ग्रामीण विकास विभागीय अधिकारियों के दल से संवाद करते कलेक्टर पूर्ण चंद्र किशन।

डूंगरपुर. जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हेमसिंह चौहान को स्मृति चिह्न व साहित्य भेंट करते उड़ीसा के अधिकारी।

इंजीनियरों को कलेक्टर ने बताया 'ऐसे बनेगी सड़क'

बगैर मशीनों के भी गुणवत्तापूर्ण निर्माण संभव : किशन

भास्कर न्यूज़ | चौखटी

महानरेगा में ग्रेवल सड़क निर्माण में मिल रही अनियमितताओं को दूर करने और गुणवत्तायुक्त उपयोगी निर्माण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कलेक्टर पूर्णचंद किशन ने बुधवार को ग्राम पंचायत जसैला में अपने निर्देशन में सौ मीटर की एक ग्रेवल सड़क का निर्माण पूर्ण करवाया और महानरेगा के जिलेभर के तकनीकी अधिकारियों को ग्रेवल सड़क की हकीकतों से रू-ब-रू करवाया।

बुधवार को दिनभर डटे रहे कलेक्टर ने ग्रेवल सड़क की द्वितीय परत की ग्रेवल बिछाते मजदूरों को कमियों को निकालते देख तो पास में पड़ा फावड़ा लेकर खुद ही कार्य पर जुट गए और ग्रेवल बिछाने लगे।

कलेक्टर को फावड़ा उठाते देख मौके पर मौजूद कार्यक्रम अधिकारी आरसी चोटरानी, जिले राठौड़, हेमंत जोशी और जिला परिषद सदस्य, सरपंच और अन्य जनप्रतिनिधि भी अपने- अपने हाथों में फावड़ा उठाकर ग्रेवल सड़क निर्माण में जुट गए। कलेक्टर और अन्य अधिकारियों को अपने साथ कार्य करता देख मौकेस्थल पर कार्य कर रहे श्रमिक भी उत्साहित होकर तेज गति से कार्य करने लगे।

स्टेप- टू- स्टेप गाईडेंस

कलेक्टर किशन ने ग्रेवल सड़क निर्माण कार्य पर सभी स्टेप्स पर अधिकारियों व श्रमिकों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए अपने इंजीनियरिंग कौशल का लाभ प्रदान किया। उन्होंने ग्रेवल सड़क निर्माण कार्य में अर्थ वर्क पर ज्यादा जोर देने की बात कही और कहा कि यदि यह मजबूत होगा तो इस आधार पर बनने वाली सड़क ज्यादा टिकाउ होगी। उन्होंने ग्रांट ट्रंक रोड का उदाहरण देते हुए कहा कि यह सड़क भारत में सर्वप्रथम बनी हुई नेशनल हाईवे सड़क है और निश्चित रूप से इस गुणवत्ता वाली सड़क आज तक अन्य जगह नहीं बनी है।

उन्होंने कहा कि उस युग में मशीनरी नहीं होती थी इस मायने सारा कार्य श्रमिकों ने ही किया था इससे यही साबित होता है कि बिना मशीनी शक्ति हम बेहतर गुणवत्ता वाली सड़क का निर्माण कर सकते हैं। कलेक्टर के इस तार्किक कथन पर मौजूद सभी तकनीकी अधिकारी और ग्रामीण उत्साहित हुए। इस दौरान कलेक्टर ने पहले पहल सूखी सड़क पर ग्रेवल की पहली परत डालने के बाद रोलिंग करने, उसके बाद पानी के छिड़काव, इस पर ग्रेवल डालने और इसकी पुनः रोलिंग करने की प्रक्रियाओं को अपनी आंखों के सामने संपादित करवाया। गुणवत्तायुक्त ग्रेवल सड़क को देखकर मौजूद अधिकारी और जनप्रतिनिधि भी कह उठे की वास्तव में पहली बार सही ग्रेवल सड़क बनी है। इस मौके पर सीमलवाड़ा उपखण्ड अधिकारी गंगासहाय मीणा, नरेगा अधिशासी अभियंता केएल सिसोदिया, जिले में नरेगों के समस्त कार्यक्रम अधिकारी, समस्त जेईएन, एईएन, जेटीए और अन्य कार्मिक मौजूद थे।

श्रमिकों व युवाओं से आत्मीय संवाद

कलक्टर ने जसैला में श्रमिकों व युवाओं से खुलकर आत्मीय संवाद किया और यहां की समस्याओं के बारे में जानकारी लेकर निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। श्रमिकों ने जिला कलक्टर को स्थानीय मिनी बैंक से ही श्रमिकों के भुगतान की व्यवस्था कराने की बात कही तो कलक्टर ने मौके से ही इस कार्य के लिए हामी भरते हुए अधिकारियों को तदनुरूप व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

इस दौरान एक विधवा महिला ने आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता के पद पर चयन के लिए आवेदन किया जिस पर कलक्टर ने पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्यवाही को आश्वस्त किया। इस मौके पर चिखली के युवाओं ने कलक्टर से संवाद करते हुए उनकी कार्यप्रणाली की प्रशंसा की और कहा कि इस प्रकार की कार्यवाही जारी रहनी चाहिए। युवाओं ने गांव में हो रहे अतिक्रमण की भी शिकायत की जिस पर कलक्टर ने सख्त कार्यवाही को आश्वस्त किया।

चौखटी। जसैला ग्राम पंचायत में नरेगा श्रमिकों के साथ फावड़ा चलाकर ग्रेवल सड़क निर्माण का कार्य करते कलेक्टर पूर्ण चंद्र किशन और अन्य अधिकारी।

दैनिक भास्कर 1 मई 2010

मेहनतकश लोगों ने दिखाई विकास की तस्वीर

हमीरपुरा के ग्रामीणों को पूरे काम पर मिला पूरा दाम और मिली सीसी सड़क की सौगात

हमीरपुरा। पंचायत समिति आसपुर की ग्राम पंचायत कलाई के हमीरपुरा गांव में ग्रामीणों द्वारा खोदी गई खाबड़िया।

राजस्थान पत्रिका 2 मई 2010

विकास की तस्वीर

सीसी सड़क की सौगात

निज संवाददाता

आसपुर, 1 मई। सौ दिनों का शर्तिया रोजगार मुहैया करवाने वाली महानरेगा योजना श्रमिकों के लिए जनोपयोगी बनती जा रही है। जिले में इस योजना के तहत ग्रामीणों की हाड़तोड़ मेहनत का परिणाम है कि जिले के कई गांवों में स्थाई प्रकृति के सैकड़ों निर्माण स्थानीय व बाहरी लोगों को विकास प्रक्रिया की मूर्त तस्वीर दिखाने लगे हैं।

मेहनत करके विकास की तस्वीर प्रस्तुत करता एक ऐसा ही एक गांव है आसपुर पंचायत समिति का हमीरपुरा। यहां पर लोगों ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सुविधार्थ ग्रेवल सड़क का इतना गुणवत्तायुक्त निर्माण किया कि गत दिनों कार्य निरीक्षण दौरान जिला कलक्टर पूर्णचंद किशन लोगों की मेहनत से अभिभूत हुए और मौके पर ही इस ग्रेवल सड़क पर सीसी सड़क निर्माण के लिए स्व-विवेक घोषणा कर दी। इस ग्रेवल सड़क के निर्माण से पूर्व गांव के एक छोर पर स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय तथा उसके दूसरी तरफ स्थित नदी तक जाने के लिए कोई व्यवस्थित सड़क नहीं थी। मात्र एक पगडण्डी के सहारे गांव के सैकड़ों बच्चे, शिक्षक और अभिभावक स्कूल जाते थे। वर्षा के दिनों में तो इस मार्ग का और भी बुरा हाल हो जाता था। इस पर ग्रामीणों ने ...

हमीरपुरा। पंचायत समिति आसपुर की ग्राम पंचायत कलाई के हमीरपुरा गांव में ग्रामीणों द्वारा खोदी गई खाबड़िया।

महानरेगा योजना के तहत ग्राम पंचायत कलाई के इस हमीरपुरा गांव में 11.27 लाख रुपए की निर्माण स्वीकृति दी गई। पांच-पांच के समूह में श्रमिकों ने दिल खोलकर कार्य किया। श्रमिकों ने दो पखवाड़े में ही 1278.42 घन मीटर ग्रेवल सड़क का निर्माण किया, इस ... 995 मानव दिवस सृजित किए ... तथा श्रमिकों को कार्य के अनुसार ...

दैनिक भास्कर 1 अप्रेल 2010

भेखरेड़ को सड़कों से मिला विकास का वरदान

पथरीली राहों व सीपेज समस्या से मिली लोगों को मुक्ति

पत्रांतस संवाददाता | दूंगरपुर

कंटीली पगडंडियों के स्थान पर गांव-गांव, ढाणी-ढाणी को नरेगा के तहत जोड़ने वाली ग्रेवल सड़कों के कारण लोगों को सुरक्षित और सहज आवागमन प्राप्त हुआ है वहीं नहरी पानी से वर्षों से चली आ रही सीपेज समस्या से भी मुक्ति मिली है।

आसपुर पंचायत समिति के भेखरेड़ गांव में भी महानरेगा योजना के तहत हुए कार्यों से विकास के नए आयाम स्थापित हुए हैं। योजना के तहत गांव में अब तक 69 कार्य संपादित हो चुके हैं जिनसे न केवल ग्रामीणजनों को रोजगार प्राप्त हुआ है बल्कि वर्षों से विकास की मुख्यधारा से छूटे इस गांव में भी बदलाव की बयार आई है और भौतिक विकास भी हुआ है। आजादी के बाद पहली बार गांव के गली मोहल्लों को जोड़ने वाली पथरीली राहें आसान हुई। योजना के तहत पथरीली राहों व सीपेज समस्या से मिली मुक्ति

दूंगरपुर। पंचायत समिति आसपुर के भेखरेड़ गांव में बनाई गई ग्रेवल सड़क।

दैनिक नवज्योति 1 मई 2010

बागड़ा। भेखरेड़ में बनी ग्रेवल सड़क और सीपेज समस्या से मुक्ति के लिए कलक्टरजी द्वारा खोदी गई खाबड़िया।

भेखरेड़ को मिला विकास का वरदान

(खोज जोशी)

बागड़ा, 1 मई। ग्रामीणों को रोजगार की गारंटी उपलब्ध कराने वाली महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के लागू होने के बाद इस अविकासी अंचल के लोगों को आधारभूत साधन सुविधाओं के साथ ही विकास की सौगात प्राप्त हुई है। टेढ़ी-मेढ़ी, कंटिली पगडण्डियों के स्थान पर गांव-गांव, ढाणे-ढाणी को जोड़ने वाली ग्रेवल सड़कों के कारण लोगों को सुरक्षित और सहज आवागमन प्राप्त हुआ है वहीं नहरी पानी से वर्षों से चली आ रही सीपेज समस्या से भी मुक्तिमिली है।

जिले की आसपुर पंचायत समिति के भेखरेड़ गांव में भी महानरेगा योजना के तहत हुए कार्यों से विकास के नये आयाम स्थापित हुए हैं। योजना के तहत गांव में अब तक 69 कार्य संपादित हो चुके हैं जिनसे न केवल ग्रामीणजनों को रोजगार प्राप्त हुआ है बल्कि वर्षों से विकास की मुख्यधारा से छूटे इस गांव में भी बदलाव की बयार आई है। योजना के तहत गांव के 1359 जॉबकार्डधारियों ने गत पांच वर्षों में विभिन्न गली मुहल्लों को जोड़ने के लिए 20 ग्रेवल सड़कों का निर्माण करने हुए गांव के लिए बड़ी उपलब्धि अर्जित की है। इन गुणवत्तायुक्त सड़कों के निर्माण से ग्रामीणों को अच्छी उपलब्धता व संवर्धन कार्यों के तहत गांव में 27 तालाबों का निर्माण और नवीकरण सहित 71 परियोजनाओं को लाभान्वित किया गया है। ...शेष पेज 6

पथरीली राहों व सीपेज समस्या से लोगों को मिली मुक्ति

The Tribune
ONLINE EDITION

NREGA workers show the way!

NREGA supervisors are a role model for other workers. A Tribune photograph

NREGA funds in Punjab could not be utilized even by 50 per cent owing to poor planning coupled with lack of will as well as high incidence of corruption. The administrative officers had by and large succumbed to pressure from different quarters to pay no-work allowance to the workers who had been listed but not assigned any job. Hence, the workers received half of the daily wages without doing any work.

In Abohar, the officials who did the work at a slow pace earned the wrath of the workers who formed a union and gheraoed government offices after short intervals. In most development blocks, mates (supervisors) could not be appointed during the past three years and a few who were lucky to get the letters have been running from pillar to post to get their remuneration paid.

Contrary to this, in the neighbouring areas of West Rajasthan, all District Collectors as well as the Bikaner Divisional Commissioner were found inspecting NREGS work and even used scales to measure the work done.

An IAS officer, Puran Chand Kishan, while inspecting the work going on the gravel road on Sarthuna road in Jharni village on Saturday spotted two women mates doing good work job and complimented them. Ramila Damore said she had done matriculation while Kokila Damore studied up to class VIII only. Both had completed regular training as mates. They were supervising 80 NREGA workers. Project officer RC Chotrani said these women mates who braved the scorching heat seem to be more careful and assertive about the quality of work than males. Ramila and Kokila can emerge as role models for others, he said. **— Raj Sadosh**

धन्यवाद